बदलते प्ररिप्रेक्ष्य में ‘नई तालीम’ शिक्षा पद्धति का वर्तमान स्वरूप

विरेन्द्र कुमार*

शिरीष पाल सिंह**

इस लेख में गाँधीजी द्वारा वर्धा में स्थापित ‘नई तालीम’ पद्धति की वर्तमान स्थिति एवं शैक्षणिक गतिविधियों का वर्णन किया गया है। इसमें गाँधीजी के शैक्षिक दर्शन की दूरदर्शिता, समवाय पद्धति, हाथ, मस्तिष्क तथा हृदय के द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास का वर्णन किया गया है। इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि गाँधीजी ने देश की आज़ादी के पहले ही यह अनुमान लगा लिया था कि शिल्प आधारित शिक्षा ही भारतीय परिस्थितियों में सफल सिद्ध हो सकती है। अतः उन्होंने शिल्प पर केंद्रित क्रिया आधारित शिक्षा पर बल दिया है। वर्तमान समय की शैक्षिक समस्याओं, रोज़गार समस्याओं, मूल्यों एवं अनुशासन के गिरते स्तर, समाज में आर्थिक एवं सामाजिक भेदभाव इत्यादि पर ध्यान दें तो हम यह कह सकते हैं कि इन सबके पीछे कहीं-न-कहीं आधुनिक शिक्षा अधिक ज़िम्मेदार है। अतः यदि हमें देश में सामाजिक एकरूपता, आपसी सद्भाव लाना है तो हमें गाँधीजी की ‘नई तालीम’ पद्धति का पुनः अध्ययन करके नये समाज की ज़रूरतों के अनुकूल उसे नये तरीके से लागू करने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

अंग्रेज़ों द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्धति पुस्तकीय थी, जो हमारे देश के अनुकूल नहीं थीं। इस शिक्षा पद्धति ने हमारे देश के विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से कोसों दूर कर दिया था। गाँधीजी ने इसे गहराई से अनुभव कर व्यावहारिक, वास्तविक एवं देश के अनुरूप शिक्षा पद्धति बनाने के बारे में सोचा, जो उनके लेखों, विचारों एवं प्रयोगों से प्रमाणित होता है। गाँधीजी के विचार के अनुसार मानव-जीवन विभिन्न वृत्तियों और शक्तियों का असंबद्ध संग्रह नहीं है, वह एक पूर्ण इकाई है। मानव जीवन के प्रत्येक कार्य का दूसरे व्यवहारों के साथ अन्योन्याश्रित संबंध है। शिक्षा के क्षेत्र में गाँधीजी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत ‘बुनियादी शिक्षा’ अथवा ‘नई तालीम’ रही है, जो वस्तुत: उनके जीवन दर्शन का प्राण-तत्व था। उनके लिए शिक्षा मात्र साक्षरता नहीं थी, बल्कि मन, शरीर और आत्मा का संपूर्ण विकास था। यह शिक्षा शिल्प पर आधारित थी, जो उनके अहिंसा के आदर्श के अनुकूल थी। महात्मा गाँधी के अनुसार शिल्प शिक्षा लोगों को शोषण, स्वार्थ तथा अनाधिकार

* *शोधार्थी* (शिक्षा विद्यापीठ), महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गाँधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र – 442001

** *सह प्रोफ़ेसर* (शिक्षा विद्यापीठ), महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गाँधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र – 442001

ग्रहण से बचाएगी। शिल्प आधारित शिक्षा से नए युग का प्रवर्तन होगा, जिसमें जाति एवं सांप्रदायिक घृणा नहीं रहेगी तथा शोषण भी समाप्त हो जाएगा। शिल्प शिक्षा प्रत्येक कामकार के व्यक्तित्व को कायम ही नहीं रखेगी, बल्कि सहयोग और समूह भावना का भी विकास करेगी।

शास्त्रों ने जीवन-वृत्ति को तीन स्वरूपों में देखा — ज्ञान, कर्म, और भक्ति। ये तीनों एक-दूसरे के संपर्क और संसर्ग से जाग्रत होते रहते हैं। गाँधीजी की शिक्षा पद्धति कर्म और ज्ञान के अनन्य संबंध को मानकर चलती है, जिसे 'समवाय' कहते हैं। समवाय के माध्यम से ही हम प्रकृति से भी कुछ सीखते हैं। ज्ञान और कर्म को हम अलग नहीं कर सकते, क्योंकि कर्म द्वारा ही ज्ञान भी प्राप्त होता है। उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गाँधीजी ने उद्योग को ही समवाय का केंद्र बनाने पर अपनी सहमति प्रकट की। "समता को बुनने वाला एवं कर्म और संयास को बुनने वाला, अर्थात् कर्म और ज्ञान का अभिन्न संबंध स्थापित करने वाला ही समवाय है।" (राय, 2010)

गाँधीजी का मानना था —"मनुष्य का सच्चा शिक्षक मनुष्य स्वयं ही है, अनुभव सबसे बड़ी पाठशाला है।" (त्रिपाठी और त्रिपाठी 2013)

'नई तालीम' शिक्षा पद्धति की नींव

स्वयं गाँधीजी के शब्दों में — "वर्धा का 'मारवाड़ी विद्यालय' जिसका नाम हाल ही में बदलकर 'नवभारत विद्यालय' कर दिया गया है, अपनी रजत जयंती मनाने जा रहा है। जयंती के साथ-साथ 'हरिजन' में जिस प्रकार की शिक्षा योजना के प्रतिपादन का मैं प्रयत्न कर रहा हूँ, उस पर चर्चा करने के लिए देश के राष्ट्रीय मनोवृत्ति वाले शिक्षाशास्त्रियों की एक परिषद् बुलाने का विचार भी इस उत्सव के आयोजकों को सूझा। परिषद् निमंत्रित करना ठीक होगा या नहीं, इस सम्बन्ध में विद्यालय के मंत्री श्री मन्नारायण अग्रवाल ने मुझसे सलाह माँगी और यदि मुझे यह विचार पसंद हो तो उसका अध्यक्ष पद भी ग्रहण करने की मुझसे प्रार्थना की। मुझे दोनों ही विचार पसंद आये। इसलिए इस परिषद् का आयोजन आगामी 22-23 अक्तूबर को वर्धा में हो रहा है।" (गाँधी, 2014)

अतः 22–23 अक्तूबर 1937 को 'वर्धा शिक्षा योजना', 'बुनियादी शिक्षा' या बाद में जिसे 'नई तालीम' कहा जाने लगा, उसका जन्म इसी परिषद् में हुआ। 'उद्योग द्वारा शिक्षा' का गाँधीजी का यह मूल विचार इस परिषद् ने ही सबसे पहले अपनाया।

परिषद् में शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण विचार

परिषद् ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करके निम्नलिखित विचार प्रकट किए —

1. शिक्षा सबकी हो,
2. शिक्षा निःशुल्क हो,
3. सबकी शिक्षा एक साथ हो,
4. शिक्षा उद्योग-केंद्रित हो,
5. शिक्षा मातृभाषा में हो,
6. शिक्षा में समग्र शिक्षा की दृष्टि हो, तथा
7. शिक्षा सर्वसुलभ हो। (पाण्डेय, 2014 और गाँधी, 2014)

इन्हीं महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर 'नई तालीम' की शुरुआत की गई थी।

गाँधीजी का कहना था कि पुरानी तालीम में जितनी अच्छी बातें हैं, वो 'नई तालीम' में रहेंगी, लेकिन उसमें नयापन काफ़ी होगा। 'नई तालीम' यदि

सचमुच नयी होगी तो इसका नतीजा यह होगा कि हमारे अंदर जो मायूसी है, उसकी जगह उम्मीदें होंगी, कंगालियत की जगह रोटी का सामान तैयार होगा। हमारे लड़के-लड़कियाँ पढ़ना-लिखना जानेंगे, साथ ही साथ हुनर भी, क्योंकि उसके ज़रिए ही वे अक्षर ज्ञान भी हासिल करेंगे।

'नई तालीम' पद्धति के सिद्धांत

शिक्षा के संबंध में निश्चित धारणा तथा उसके क्रियान्वयन को सतत ध्यान में रखे जाने वाले मुख्य तत्वों को हम साधारणतः उसका सिद्धांत कहते हैं। अतः अब हम 'नई तालीम' पद्धति के सिद्धांतों के बारे में पढ़ेंगे।

1. **निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा** — प्रत्येक मानव को शिक्षा पाने का जन्मसिद्ध अधिकार है। अंग्रेज़ों ने जब शिक्षा प्रारंभ की तो उन्होंने कुछ उच्च वर्ग को ही शिक्षित करना प्रारंभ किया था, क्योंकि उनका मानना था कि हम योग्य लोगों को शिक्षित कर रहे हैं, ये शिक्षित व्यक्ति ही अन्य लोगों को शिक्षित कर देंगे। इस प्रकार शिक्षा ऊपर से नीचे छन-छनकर जनसाधारण तक पहुँच जाएगी। जब गाँधीजी ने 'नई तालीम' पद्धति का विचार व्यक्त किया तो उन्होंने इसके मुख्य सिद्धांत के रूप में अनिवार्य शिक्षा रखी, जिससे शिक्षा सर्वसाधारण तक पहुँच सके। उनका मानना था कि यदि शिक्षा अनिवार्य होगी, तभी हमारे देश की सांप्रदायिक संकीर्णता, जातिगत भेद-भाव, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर आदि भावनाएँ मिटेंगी। किंतु शिक्षा अनिवार्य रूप से तभी सबको मिल सकती है, जब वह निःशुल्क हो, क्योंकि भारत एक गरीब देश है। इसीलिए 'नई तालीम' के मुख्य सिद्धांत के रूप में 8 वर्ष तक के बालकों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का विचार स्वीकार किया गया, क्योंकि गाँधीजी मानते थे कि विद्यादान का संबंध पैसे से नहीं होना चाहिए। नई तालीम विद्यालय में निःशुल्कता के चलते विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई, क्योंकि इससे अभिवावकों का बोझ हलका हो गया था।
2. **मातृभाषा द्वारा शिक्षा** — 'नई तालीम' का दूसरा सिद्धांत बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देना है, क्योंकि शिक्षाविदों द्वारा अनुभव किया गया कि मातृभाषा द्वारा जिस विषय को कम समय में समझाया जा सकता है, उसे अन्य भाषा द्वारा समझने में अधिक समय बर्बाद हो जाता है। गाँधीजी ने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर कहा कि — "मुझे गणित, रेखागणित, रसायनशास्त्र एवं ज्योतिष सीखने में चार साल लगे। उतना मैं एक साल में ही सीख लेता, यदि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होता" (राय, 2010)। गाँधीजी की भावना थी कि अपनी भाषा के ज्ञान के बिना कोई सच्चा देशभक्त नहीं बन सकता। मातृभाषा में शिक्षा के बिना हमारे हृदय में मातृभाषा के प्रति स्नेह कम रहता है। भारत के साहित्य और धर्म को विदेशी भाषा के माध्यम से कभी नहीं समझा जा सकता। यदि मातृभाषा में शिक्षा नहीं मिलती है, तो वह तोता रटंत जैसी शिक्षा है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण हमारी मौलिकता नष्ट हो सकती है ।
3. **उद्योग-केंद्रित शिक्षा** — उद्योग ज्ञान की जननी हैं। ज्ञान अनुभूति से निकलता है और अनुभूति कर्म से निकलती है अर्थात् स्पष्ट है की ज्ञान का स्रोत कर्म और उद्योग हैं। लेकिन अंग्रेज़ी शिक्षा का दुष्परिणाम सामूहिक रूप से हमारे समाज पर पड़ा। ऐसी स्थिति हो गई कि पढ़े-लिखे लोग

अपने पेशे को भूल गए। फलस्वरूप समाज दो वर्गों में बँटता चला गया, जिसमें से एक मानसिक कार्य एवं दूसरे श्रम में लगें। इस शिक्षा व्यवस्था से अधिकतर विद्यार्थी लिपिक और भाष्यकार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर सकते थे। इस शिक्षा से बच्चों की स्वतंत्र वृत्ति के अवसर कम हो गए थे। बच्चे यह शिक्षा पाकर अपने पुश्तैनी धंधे, जैसे—लुहार, बढ़ई, दर्जी, कृषि, गौ-पालन आदि को नीच काम समझने लगे थे। इस प्रकार अंग्रेज़ी शिक्षा ने हमें श्रम का तिरस्कार करना सिखा दिया। उक्त अंग्रेज़ी शिक्षा के दोषों को देखते हुए गाँधीजी ने उद्योग शिक्षा पर बल दिया, क्योंकि उद्योग के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने पर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। इससे जीवनोपयोगी विविध ज्ञान भी प्राप्त होता है, साथ ही आजीविका का एक समर्थ साधन भी प्राप्त हो जाता है। हमें काम के द्वारा, काम के लिए एवं काम से ही संपूर्ण जीवन की शिक्षा की ज़रूरत है। गाँधीजी ने वर्धा शिक्षा सम्मलेन में कहा कि—"आज मैं जो चीज आपके सामने रखने जा रहा हूँ, वह पढ़ाई के साथ-साथ एकाध धंधा सिखा देने की चीज़ नहीं है। मैं तो अब यह कहना चाहता हूँ कि लड़कों को जो कुछ भी सिखाया जाए, वह सब किसी न किसी उद्योग या दस्तकारी के जरिये ही सिखाया जाए।" (राय, 2010 एवं गाँधी, 2014)

गाँधीजी ने कहा कि लड़के और लड़कियों के सर्वोन्मुखी विकास के लिए जहाँ तक हो सके, शिक्षा किसी-न-किसी ऐसे माध्यम से दी जानी चाहिए जिससे कुछ उपार्जन भी किया जा सके। दूसरे शब्दों में, इस उद्योग आधारित धंधे द्वारा दो उद्देश्य सिद्ध होने चाहिए, एक तो विद्यार्थी अपने परिश्रम के फल द्वारा अपनी पढ़ाई का खर्च अदा कर सके और दूसरे इसके साथ ही स्कूल में सीखे गए उद्योग आधारित धंधों द्वारा उस लड़के या लड़की के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो सके। इनका मानना था कि कपास, रेशम, ऊन की चुनाई से लेकर सफ़ाई, कपास की ओटाई, पिंजाई, कताई, रंगाई, माड़ लगाना, ताना लगाना, दुसूती करना, डिज़ाइन बनाना, कसीदा करना, कागज़ बनाना, ज़िल्दसाजी करना, अलमारी बनाना, खिलौना बनाना, गुड तैयार करना आदि ऐसे धंधे हैं जो आसानी से सीखे जा सकते हैं और साथ ही साथ इन व्यवसायों के लिए बहुत बड़ी पूँजी भी नहीं लगती। (पाण्डेय, 2014)

4. **जीवन की स्वाश्रयता या स्वावलंबी शिक्षा**—निःशुल्क, अनिवार्य, स्वभाषा, उद्योग-केंद्रित और समग्र शिक्षा वह है जो व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र को स्वावलंबी या स्वाश्रयी बनाए। स्वाश्रयी के भीतर दो शब्द हैं — एक स्व और दूसरा आश्रयी अर्थात् जो अपने ऊपर आश्रित हो। स्वाश्रयता से सत्य और अहिंसा का भी पालन होता है। इसीलिए गाँधीजी चाहते थे की शिक्षा आत्मनिर्भर हो। वे चाहते थे कि शिक्षण द्वारा ही बच्चे ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ भविष्य की आजीविका में निपुणता भी प्राप्त कर सकें। इसलिए उनकी राय थी कि विद्यार्थियों को बढ़ईगिरी, पैमाइश, नक्शे बनाना, मोटर चलाना, फोटोग्राफ़ी करना, मशीनों का काम करना, रंगाई, कृषि, वाद्य यंत्र बनाना, सिलाई आदि करना चाहिए जिससे उनके भोजन एवं वस्त्र के खर्च निकल जाएँ। (लाल, और तोमर, 2008 तथा राय, 2010)

5. **शिक्षा की प्रक्रिया में बालक को प्रमुखता**—गाँधीजी मनुष्य के मानस और आत्मा में सन्निहित सर्वोत्तम या समुचित और सर्वांगीण विकास को शिक्षा का लक्ष्य मानते थे। चूँकि बालक का अपना व्यक्तित्व होता है और उसके व्यक्तित्व के विकास में कोई संस्था बाधक न हो, इसीलिए 'नई तालीम' के सिद्धांत में बाल-केंद्रित शिक्षा जोड़ा गया। अतः बुनियादी शालाओं में जितनी भी क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ सम्पादित होती हैं, वे सब बालकों की शक्ति, प्रवृत्ति एवं अभिरुचि के अनुसार आयोजित होती हैं। बालक काम करना जानना, प्यार करना एवं प्यार पाना चाहता है, क्योंकि यह बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यदि बच्चों के अनुरूप काम होते हैं, तो इन पर तनिक भी बोझ नहीं पड़ता, साथ ही स्वाभाविक तौर पर मानसिक विकास भी होता है। गाँधीजी की उक्ति है — "मेरे लिए तो सच्ची *नई तालीम* वही है, जहाँ बच्चे खेलते-खेलते सीखें।" (राय, 2010)
6. **'नई तालीम' पद्धति में अध्यापक की भूमिका**— 'नई तालीम' पद्धति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्रतिभाशाली, चरित्रवान और आस्थावान शिक्षक का होना आवश्यक है। नई तालीम को असली रूप देने के लिए आचार्य विनोबा भावे ने आचार्य कुल के गठन पर बल दिया। आचार्य कुल, अर्थात् ऐसे शिक्षकों, आचार्यों का परिवार जो आचार और विचार, दोनों दृष्टि से समाज में अनुकरणीय हो। वे शिक्षकों में तीन गुणों का होना आवश्यक मानते थे, जो थे विद्यार्थियों से प्रेम वात्सल्य और अनुराग, निरंतर अध्ययनशीलता, तटस्थता और राजनीति से मुक्ति। इस प्रकार 'नई तालीम' पद्धति में शिक्षकों पर सर्वोदय समाज के निर्माण का सबसे अधिक दायित्व है।
7. **नूतन मानव के निर्माण के लिए 'नई तालीम' पद्धति**—गाँधीजी के 'नई तालीम' के सिद्धांत का उद्देश्य नूतन मानव का निर्माण करना भी था, क्योंकि शिक्षा का आभूषण संस्कार भी है। मनुष्य का पेट भी भरे, पहनने के लिए कपड़े हों, रहने के लिए आवास हो, लेकिन जब तक उसका जीवन सुसंस्कृत नहीं होता, तब तक वह शिक्षित नहीं समझा जाता। संस्कार का शिक्षण शोषण रोकता है, साथ ही पोषण का भी भाव भरता है, प्राणिमात्र में सहानुभूति और प्रेम भी उपस्थित करता है, धनी-गरीब का भेद मिटाता है, ऊँच-नीच में समता लाता है, साथ ही सर्वोदयवाद भी उपस्थित करता है अर्थात् सही ज्ञान की प्राप्ति हेतु ही मानव के चरित्र-निर्माण को महत्वपूर्ण स्थान 'नई तालीम' में दिया गया।

'नई तालीम' शिक्षा पद्धति के आधार

'नई तालीम' की पद्धति निर्धारित करने के उद्देश्य से ही गाँधीजी ने 1937 में *हरिजन* पत्रिका में कुछ विचारों को छापा, जिसे 'नई तालीम' पद्धति का आधार कह सकते हैं। ये विचार थे —

- यदि हमें मानव समाज को लड़ाकू प्रवृत्ति से उबारना है तो शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो तमाम देशों में और सभी जातियों में काम दे सकती हो।
- इनकी मान्यता है कि शिक्षा पद्धति ऐसी हो जो भले-बुरे का ज्ञान कराते हुए सामाजिक जीवन में भाग लेना सिखाए।
- 'नई तालीम' की शिक्षा पद्धति उद्योग पर ही निर्भर करेगी। बच्चे उद्योग भी चलाएँगे एवं बौद्धिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। अतः इस शिक्षा का मध्य बिंदु उत्पादक पेशा ही होगा। इसके साथ ही

इतिहास, भूगोल, गणित, भौतिकी, समाज आदि की भी शिक्षा उद्योग के साथ दी जाए।

- गाँधीजी शिक्षा की ऐसी पद्धति चाहते थे जिसमें उद्योग शिक्षा का केवल वाहक नहीं होगा, बल्कि इसके द्वारा हर तरह के शरीर श्रम के प्रति, चाहे वह अच्छा काम क्यों न हो, आदर का भाव उत्पन्न हो सके। विद्यार्थियों में कर्तव्यनिष्ठा भाव जाग्रत हो तथा अपनी रोज़ी ईमानदारी के साथ शारीरिक श्रम करके ही प्राप्त कर सकें।
- इस पद्धति में शिक्षा का ऐसा लक्ष्य होगा जो विद्यार्थी को उद्योग सिखाने के साथ-साथ उसे तमाम शारीरिक, बौद्धिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने में सहायक हो।
- 'नई तालीम' पद्धति का आधार ऐसा होना चाहिए जिसमें विज्ञान की पूरी शिक्षा के साथ-साथ दस्तकारी की भी शिक्षा हो।
- 'नई तालीम' पद्धति ऐसी हो जिसमें मातृभाषा का अच्छा ज्ञान, मातृभाषा के साहित्य का साधारण परिचय, राष्ट्रभाषा का ज्ञान, आलेखन, संगीत, काव्य, खेल, व्यायाम आदि कराया जाए।
- खादी उद्योग द्वारा ही 'नई तालीम' देने की पद्धति बनाई जाए।
- उनकी शिक्षा शिक्षाविद् के पर्यवेक्षण में होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर पर सभी शिक्षक चरित्रवान होने चाहिए।
- प्रत्येक बालक-बालिका की विशेष अभिक्षमताओं की पहचान की जानी चाहिए।
- सामान्य ज्ञान की शिक्षा इस तरह दी जानी चाहिए कि बालक पहले चीज़ो को समझना प्रारंभ करे, पढ़ना या लिखना बाद में होना चाहिए।
- विद्यार्थियों को सर्वप्रथम सरल ज्यामितीय चित्र बनाना सिखाना चाहिए, जब वे इन्हें सरलतापूर्वक सीख लें तो उन्हें वर्णमाला सिखानी चाहिए, जब छात्र यह भी सीख लें तब उन्हें अच्छी लिखावट सिखानी चाहिए।
- लिखने से पहले पढ़ना आना चाहिए। सर्वप्रथम अक्षर को चित्रों के माध्यम से सिखाना चाहिए।
- जब छात्र 8 वर्ष से अधिक उम्र का हो जाए तो उसे उसकी क्षमता के अनुसार ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
- छात्र को कुछ भी ज़बरदस्ती नहीं सिखाना चाहिए, जिसमें छात्र की रुचि हो, वही सिखाना चाहिए।
- शिक्षा खेल के माध्यम से दी जानी चाहिए, क्योंकि खेल शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है।
- सभी तरह की शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए।
- बालक को राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी सिखानी चाहिए, इससे पहले कि वह अक्षर ज्ञान प्राप्त करे।
- धार्मिक शिक्षा अपरिहार्य है और इसे छात्र को शिक्षकों के आचार-व्यवहार, उनको सुनकर, उसके बारे में बातचीत करके सिखाना चाहिए।
- आठ से सोलह वर्ष विद्यार्थियों की शिक्षा का द्वितीय स्तर है। जहाँ तक हो सके, यह होना चाहिए कि द्वितीय स्तर में लड़के-लड़कियों को सहशिक्षा दी जाए।
- इस स्तर पर लड़कों को उनके माता-पिता के द्वारा उनके पसंद के व्यवसाय में प्रवीण किया जाए, जो उन्होंने बचपन में हाथ से किया हो।
- इस स्तर पर विद्यार्थियों को विश्व इतिहास, भूगोल, खगोलशास्त्र, बीजगणित और ज्यामितीय की सामान्य जानकारी अर्जित करनी चाहिए।
- सभी विद्यार्थियों को सिलाई और कुकिंग सिखानी चाहिए।
- द्वितीय स्तर पर छात्र आत्मनिर्भर हो जाएँ। वे अधिकतम समय पढ़ाई करें। कुछ उद्योगों के कार्य भी करें, जिससे होने वाली आय से उनके विद्यालय खर्च का वहन हो सके।
- सोलह से पच्चीस वर्ष विद्यार्थियों का तीसरा स्तर है। इस स्तर पर प्रत्येक युवा को उसकी इच्छा व परिस्थिति के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए।

- उत्पादन कार्य शुरू से ही प्रारंभ कर देना चाहिए, लेकिन प्रथम स्तर पर उसके विद्यालय व्यय के बराबर उत्पादन कार्य नहीं कराना चाहिए।
- शिक्षकों को बहुत अधिक वेतन नहीं देना चाहिए। वे जीवन को जी सकें, उतना ही वेतन देना चाहिए। उन्हें सेवा की भावना से अध्यापन कार्य करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर किसी भी व्यक्ति को शिक्षक के रूप में नियुक्त नहीं करना चाहिए।
- अंग्रेज़ी को केवल एक अलग भाषा के रूप में पढ़ाना चाहिए। इसको केवल राष्ट्रीय व्यवसाय या अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में पढ़ाना चाहिए।
- महिलाओं को कोई अलग शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। जहाँ पर ज़रूरत हो, वहाँ पर उनको विशेष सुविधाएँ दी जानी चाहिए, नहीं तो अन्य जगह उन्हें पुरुषों के समान ही सुविधाएँ दी जानी चाहिए।
- बड़े और महंगे मकान शैक्षिक संस्थान के लिए ज़रूरी नहीं हैं।

गाँधीजी के उक्त विचार को ध्यान में रखते हुए ही 'नई तालीम' पद्धति का निर्माण किया गया, जिसे कुछ शिक्षाविदों ने 'समवाय पद्धति' भी कहा। वर्धा सम्मेलन में गाँधीजी ने यह प्रस्ताव रखा था कि शिक्षा का केंद्र बिंदु उत्पादक उद्योग होने चाहिए। इस सिद्धांत के अनुसार हमारे सब विद्यार्थियों को खेती और बुनने का काम करना चाहिए और बच्चों को जो शिक्षा-दीक्षा देनी है, उसका संबंध जहाँ तक हो सके उसी केंद्रीय उद्योग से होना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि गाँधीजी यह चाहते थे कि बालक उद्योग के माध्यम से न केवल ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी बातें सीखें, बल्कि औद्योगिक क्रियाओं के संपादन के सिलसिले में ही उनके चरित्र और व्यक्तित्व का सम्यक, संतुलित और सर्वांगीण विकास भी हो जाए। गाँधीजी की मंशा थी कि शिक्षा पद्धति ऐसी हो जिसके द्वारा बालक के हाथों का, मस्तिष्क का और उसकी आत्मा का विकास हो। (दुबे, 2013 और ओड़, 2014)

गाँधीजी उद्योग का व्यापक अर्थ लगाते थे, क्योंकि उद्योग के लिए कच्चा माल प्रकृति से प्राप्त होता है और निर्मित वस्तुओं का उपभोग समाज करता है। अतः इनकी उद्योग-केंद्रित शिक्षा वस्तुतः प्रकृति, समाज एवं उद्योग पर केंद्रित है अर्थात् उन तीनों में परस्पर समवाय स्थापित है, चूँकि कर्म और ज्ञान का अभिन्न संबंध ही समवाय कहलाता है, अतः विभिन्न क्रियाओं द्वारा ज्ञानोपार्जन करना समवाय शिक्षण का उद्देश्य है। (राय, 2010 और पाण्डेय, 2014)

'नई तालीम' पद्धति का वर्तमान स्वरूप

'नई तालीम' पद्धति की जब शुरुआत की गई तो यह मानकर की गई कि यह केवल यांत्रिक शिक्षा या उद्योग की शिक्षा मात्र नहीं है, बल्कि यह तो सर्वांगीण बौद्धिक विकास तथा सांस्कृतिक समन्वय की शिक्षा है। बौद्धिक विकास तथा संस्कृति के उच्च आदर्श तक पहुँचना इसका मुख्य उद्देश्य है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु शब्द तथा ग्रंथ उपयोग में नहीं लाए जाएँगे, बल्कि जीवन के प्रत्यक्ष प्रयोगों और प्रकृति के पूर्ण अध्ययन द्वारा समाज की आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त कर प्राकृतिक साधनों का मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समुचित प्रयोग किया जाएगा। लेकिन समय के साथ 'नई तालीम' के पठन-पाठन का स्वरूप और शिक्षण पद्धति कुछ हद तक वैसी ही चल रही है, यद्यपि कुछ परिवर्तन भी हुए हैं। 'नई तालीम' पद्धति का वर्तमान स्वरूप अग्रलिखित है —

'नई तालीम' पद्धति विद्यालय की समय सारणी (कक्षा 6–8 तक)

दिन/ समय	10:05 10:25	10:30 11:10	11:10 11:45	11:45 11:50	11:50 12:25	12:25 01:00	01:00 01:35	01:35 02:05	02:05 02:40	02:40 03:15	03:15 03:20	03:20 03:55	03:55 04:30	04:30 05:00
सोमवार	बाल सभा	अंग्रेज़ी	भूगोल	अल्प अवकाश	विज्ञान	गणित	मराठी	मध्याह्न भोजन अवकाश	कंप्यूटर		अल्प अवकाश	बागवानी कार्य		सफ़ाई
मंगलवार		अंग्रेज़ी	भूगोल		विज्ञान	गणित	मराठी					हिंदी		
बुधवार		अंग्रेज़ी	भूगोल		विज्ञान	गणित	मराठी		चित्रकला नृत्य			बागवानी कार्य		
गुरुवार		अंग्रेज़ी	भूगोल		विज्ञान	गणित	मराठी		शारीरिक शिक्षा	हिंदी		कंप्यूटर		
शुक्रवार		अंग्रेज़ी	भूगोल		विज्ञान	गणित	मराठी		इतिहास	इतिहास		वाचनालय	हिंदी	

दिन / समय	08:00-08:40	08:40-09:50	09:50-10:30	10:30-11:00	11:00-11:30	11:30 12:00	12:00-02:00
शनिवार	योग	बाल सभा	अंग्रेज़ी	मध्याह्न भोजन	मराठी	गणित	सूत कताई

- विद्यालय सुबह 10:00 बजे प्रारंभ होता है। सबसे पहले बाल सभा होती है, जिसे हम लोग सरकारी विद्यालयों में प्रार्थना सभा कहते हैं। यह स्वयं विद्यार्थियों द्वारा की जाती है। इसके उपरांत सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षा में जाने के लिए निकलते हैं। कक्षा में प्रवेश करने से पहले कक्षा के बाहर अपने जूते-चप्पल पंक्ति में रखते हैं, तत्पश्चात् कक्षा में प्रवेश करते हैं। इसके बाद वे अपनी मेज़ या बिछावन, जोकि एक तरफ़ रखे होते हैं, को उठाते हैं और उस पर बैठते हैं। शाम को जाते समय फिर से विद्यार्थी अपनी-अपनी मेज़ या बिछावन को उठाकर यथास्थान पर रख देते हैं।
- सामान्यतः कक्षाएँ दिन में सुबह 10:00 से शाम 5:00 बजे तक (सोमवार से शुक्रवार) चलती हैं। किंतु शनिवार को 8:00 से 2:00 बजे तक कक्षा चलती है, इसमें भी छोटी कक्षाएँ (कक्षा 1 से 5) 8:30 से 12:30 बजे तक ही चलती हैं। 'नई तालीम' विद्यालय में वर्ष में 288 दिन कार्य किया जाता है।
- **वर्तमान 'नई तालीम' पद्धति का पाठ्यक्रम** — वर्तमान 'नई तालीम' पद्धति क्रिया-केंद्रित है। यह शिक्षा प्रणाली मानव के पूर्ण विकास अर्थात् उसके शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के सर्वोत्तम विकास पर आधारित है। इसमें बुनियादी शिल्प, जैसे — कृषि कार्य, सूत कातना, बुनाई करना, लकड़ी का काम, गत्ते का काम, धातु का काम, बागवानी, चमड़े का काम आदि समाज की स्थानीय जीवन वृत्तियों के अनुकूल होता है। अंग्रेज़ी, हिंदी, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, मातृभाषा, चित्रकला, नृत्य आदि विषयों को शामिल करके पठन-पाठन कार्य किया जाता है। गाँधीजी इस बात पर ज़ोर दिया करते थे कि शिक्षा शिल्प-केंद्रित होनी चाहिए, अतः उसी के अनुरूप 'नई तालीम' शिल्प-केंद्रित है। गाँधीजी के कहे अनुसार मातृभाषा में ही स्कूल में शिक्षा दी जाती है, क्योंकि यह विचारों की अभिव्यक्ति तथा उनके प्रसरण का प्रभावशाली साधन है। गणित को व्यावहारिक जीवन की स्थितियों के साथ संबंधित किया गया है। इसके अंतर्गत अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित को शिल्प शिक्षा के सहयोग से पढ़ाया जाता है। विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति वास्तविक रूप से रुचि उत्पन्न करने के लिए संगीत तथा चित्रकला के विषयों को भी सम्मिलित किया गया है।
- **'नई तालीम' पद्धति के पाठ्यक्रम की विशेषताएँ** — पाँचवी कक्षा तक के बालक और बालिकाओं के लिए समान पाठ्यक्रम है। पाँचवी कक्षा के बाद बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक पाठ्यक्रम की व्यवस्था है। छठी से आठवीं कक्षा की बालिकाएँ आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृह विज्ञान विषय का अध्ययन कर सकती हैं। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है, पर राष्ट्रभाषा हिंदी का अध्ययन समस्त बालक एवं बालिकाओं के लिए अनिवार्य है।
- **शिक्षण विधि** — 'नई तालीम' पद्धति में चाहे जिस विधि का प्रयोग किया जाए, पर प्रशिक्षण

का कार्य क्रियाओं और अनुभवों पर अनिवार्य रूप से आधारित होता है। शिक्षण विधि इतनी अधिक व्यावहारिक होती है कि बालक विभिन्न विषयों का ज्ञान एक ही समय में प्राप्त करता है। विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की शिक्षा स्वतंत्र रूप में न देकर आधारभूत शिल्प के माध्यम से प्रदान की जाती है। यदि किसी विषय की शिक्षा आधारभूत शिल्प के माध्यम से नहीं दी जा सकती है तो उसकी शिक्षा किसी अन्य विधि से दी जाती है। पाठ्यक्रम के समस्त विषय परस्पर संबंधित ज्ञान क्षेत्रों के रूप में बालकों के सम्मुख प्रस्तुत किए जाते हैं। प्राकृतिक परिस्थिति, सामाजिक परिस्थिति और हस्तकला के माध्यम से अनेक विषयों में परस्पर संबंध स्थापित किया जाता है। बालक को अपनी रुचि के अनुसार हस्तशिल्प का चुनाव करने की स्वतंत्रता दी जाती है। 'नई तालीम' विद्यालय में शिक्षकों द्वारा चार्ट, खिलौने, इंटरनेट, ऊर्जा से जुड़े मॉडल, जैव विविधता से जुड़े हुए कुछ मॉडलों के माध्यम से विद्यार्थियों को सिखाया जाता है। 'नई तालीम' विद्यालय में होने वाली गतिविधि आधारित शिक्षण विधियों को पूर्व ज्ञान से जोड़कर सिखाया जाता है।

'नई तालीम' विद्यालय के विद्यार्थी स्वयं से पढ़कर सीखना अधिक पसंद करते हैं। कहानी को सुनने से ज़्यादा पढ़ने को वरीयता देकर सीखते हैं। विभिन्न अवधारणाओं को चार्ट, आरेख, मानचित्र के माध्यम से समझने में उनको सहायता मिलती है। स्वयं द्वारा हाथों से की जाने वाली क्रियाओं में वे आनंद का अनुभव करते हैं। इसमें वे अपने सहपाठियों के साथ समूह में कार्य करते हुए एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं, जिससे उनके अंदर आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

- **शिक्षकों की शिक्षण शैली** — 'नई तालीम' पद्धति में शिक्षक विषय ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हैं। शिक्षकों द्वारा पिछले दिनों पढ़ाए गए पाठ का पुनरवलोकन किया जाता है। विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों द्वारा बागवानी, सिलाई, नृत्य, कढ़ाई, बुनाई, मिट्टी की कारीगरी, क्राफ़्ट, कागज़ से बने हुए खिलौने, रसोई कार्य इत्यादि के माध्यम से विद्यार्थियों को कौशल की शिक्षा दी जाती है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय में मूल्य आधारित शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है।
- **शिक्षक-विद्यार्थी अंतर्क्रिया** — 'नई तालीम' के अंतर्गत शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य विषय-वस्तु को पढ़ाए जाने के दौरान प्रश्न-उत्तर के माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पूर्ण होती है। कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव तथा विचारों को बढ़ावा दिया जाता है। शिक्षकों द्वारा विद्यालय में वाचन, प्रश्न-उत्तर, मॉडल, समूह कार्य, चर्चा-परिचर्चा तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन से जोड़कर शिक्षण को प्रभावशाली बनाते हुए अंतर्क्रिया का कार्य संपन्न किया जाता है।

- **कंप्यूटर प्रशिक्षण** — कंप्यूटर का प्रशिक्षण कक्षा 4 – 10 तक के विद्यार्थियों को दिया जाता है। यह प्रशिक्षण विभिन्न कक्षा के विद्यार्थियों को अलग-अलग समय पर दिया जाता है। विद्यार्थियों को इंटरनेट एवं अन्य नई सूचनाओं से संबंधित जानकारी दी जाती है।
- **विज्ञान प्रयोगशाला** — विद्यार्थियों के लिए एक उच्च कोटि की विज्ञान प्रयोगशाला भी है, जिसमें समय-समय पर विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान से संबंधित प्रयोग कार्य किए जाते हैं।
- सत्र 2016–17 से पहली बार कक्षा 10 का अध्ययन कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके पहले कक्षा 9 तक ही शिक्षण का कार्य किया जाता था।
- शनिवार को सुबह की कक्षा में विद्यार्थियों को यह बताया जाता है कि अगले सप्ताह में कौन-कौन सी योजनाएँ क्रियान्वित की जानी हैं, जैसे — शिल्प शिक्षा के अंतर्गत किन वस्तुओं एवं सामग्री का निर्माण करना है।
- शिल्प शिक्षा से संबंधित सारे कार्य, जैसे — कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, खेती इत्यादि काम दोपहर 2:00 बजे के बाद किए जाते हैं। सिलाई के अंतर्गत बैग, पर्स इत्यादि बनाए जाते हैं, जबकि कढ़ाई के अंतर्गत पंखी, पावदान, पोछा, चटाई इत्यादि बनाई जाती हैं। इन सभी बनाए गए सामान की बिक्री की जाती है।
- वर्ष में कई बार बड़े पैमाने पर निर्मित सामानों की बिक्री की जाती है। इसके प्रदर्शन के लिए विभिन्न जगहों एवं विद्यालयों से लोगों को बुलाया भी जाता है (जैसे — 8 अक्तूबर, 2016 को विद्यार्थियों द्वारा निर्मित सामानों की बिक्री का कार्य किया गया)।
- अन्य शिक्षण संस्थानों की तरह वर्ष में दो बार परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं तथा विद्यार्थियों को अंकपत्र प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी के केवल बौद्धिक विकास पर ही बल दिया जाता है। उसके शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के प्रति तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाता, जिससे बालक का केवल एकांगी विकास होता है। लेकिन 'नई तालीम' पद्धति में बालक के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के प्रति पूर्ण ध्यान दिया जाता है। यदि हम आधुनिक शिक्षा पद्धति पर विचार करें तो वर्तमान समय में बहुत अधिक संख्या में नवयुवक मेडिकल, इंजीनियरिंग, कला, विज्ञान एवं अन्य विषयों की शिक्षा लेकर भी बेरोज़गार हैं, जिसके कारण सामान्य शिक्षा व्यवस्था से आज लोगों का मोहभंग हो रहा है। अतः हमें गाँधीजी की 'नई तालीम' पद्धति पर एक बार पुनः ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। वर्तमान आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यदि गाँधीजी की 'नई तालीम' को सही तरीके से लागू किया जाए तो विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास अर्थात् उसका सर्वांगीण विकास आसानी से संभव है। यह शिक्षा शिल्प पर आधारित होने के कारण आम जनमानस के लिए रोज़गार प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ

ओड़, एल. के. 2014. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि*. हिंदी ग्रंथ अकादमी, *राजस्थान*.

कुमारी, किरण. 2007. *गाँधी — विचार और दर्शन* (प्रथम संस्करण). राजेश प्रकाशन, नयी दिल्ली.

गर्ग, पूनम. 1995. *गाँधी की विचारधारा पर पश्चिम का प्रभाव*. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.

गाँधी, एम.के. 2007. *सत्य के प्रयोग* (पुनर्मुद्रण). नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद.

———. 2008. *मेरे सपनों का भारत*. राजपाल एंड संस, नयी दिल्ली.

———. 2011. *आश्रम आब्ज़र्वेशंस इन ऐक्शन*. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद.

———. 2014. *बुनियादी शिक्षा*. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, *वाराणसी*.

जोशी, एम. सी. 2015. *गाँधी, नेहरू, टैगोर तथा अंबेडकर*. अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद.

दुबे, सत्यनारायण. 2013. *भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षाविद्*. अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद.

पाण्डेय, रामशकल. 2010. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

———. 2013–14. *शिक्षादर्शन और शिक्षाशास्त्री* (द्वितीय संस्करण). अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

पाण्डेय, के.पी. 2011. *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार*. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.

प्रभाकर, विष्णु. 2003. *गाँधी — समय, समाज और संस्कृति* (प्रथम संस्करण). वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

प्रसाद, वीणा. 2009. *महात्मा गाँधी के आर्थिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा* (प्रथम संस्करण). जानकी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

राय, वीरचन्द्र. 2010. *गाँधीवादी बुनियादी शिक्षा — बिहार के आईने में* (प्रथम संस्करण). मेधा प्रकाशन, नयी दिल्ली.

लाल, रमन बिहारी और तोमर, गजेन्द्र सिंह. 2008. *विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक*. आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ.

लाल, रमन बिहारी. 2010. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत*. रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.

शर्मा, आर.ए. 2010. *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार*. आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, श्रीराम. 2003. *गाँधी मानव रूप में* (प्रथम संस्करण). नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली.

शर्मा, वीरेन्द्र और शर्मा, ऋचा. 2008. *गाँधी विचार दर्शन*. यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

सिंह, अश्वनी कुमार. 2016. *शिक्षा के परिप्रेक्ष्य*. अंशिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद.

सिंह, एम. कुमार और चौधरी, एस. कुमार. 2007. *भारतीय राजनीतिक चिन्तक महात्मा गाँधी* (प्रथम संस्करण). डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.

सिंह, श्रीभगवान. 2012. *गाँधी एक खोज* (प्रथम संस्करण). भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली.

सिन्हा, मनोज. 2010. *गाँधी अध्ययन*. ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

सिंह, सतीश कुमार. 2016. *महात्मा गाँधी जीवन एवं दर्शन*. भार्गव ऑफ़सेट, इलाहाबाद.

त्रिपाठी, मधुसुदन और त्रिपाठी, ए. कुमार. 2013. *महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन* (प्रथम संस्करण). ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली.